RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
सितंबर
22
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

राज्यों का बढ़ता सार्वजनिक ऋण / Rising Public Debt of States

संदर्भ:

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) की एक पहली बार जारी की गई रिपोर्ट में राज्यों की वित्तीय स्थिति का दशकभर का विश्लेषण सामने आया है। रिपोर्ट के अनुसार, देश के सभी 28 राज्यों का सार्वजनिक ऋण पिछले 10 वर्षों में तीन गुना हो गया है — वर्ष 2013-14 में जहाँ यह ₹17.57 लाख करोड़ था, वहीं 2022-23 में बढ़कर ₹59.60 लाख करोड़ तक पहुँच गया।

सार्वजनिक ऋण क्या है?

सार्वजनिक ऋण वह उधारी है, जो सरकार अपने खर्च राजस्व से अधिक होने पर लेती है। इसमें केंद्र या राज्य के समेकित कोष से उठाई गई सभी देनदारियाँ शामिल होती हैं। सार्वजनिक ऋण दो प्रकार का होता है: **आंतरिक** (बाज़ार योग्य जैसे जी-सेक, टी-बिल्स और गैर-बाज़ार योग्य जैसे एनएसएसएफ के लिए विशेष प्रतिभूतियाँ) और **बाहरी** (विदेशी स्रोतों से लिया गया ऋण)।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष:

1. कर्ज़ की वृद्धि (Debt Growth)

- राज्यों का संयुक्त सार्वजनिक कर्ज़ 2013-14 में ₹17.57 लाख करोड़ से बढ़कर 2022-23 में ₹59.60 लाख करोड़ हो गया।
- GSDP (सकल राज्य घरेलू उत्पाद) के अनुपात में कर्ज़ 2013-14 में **16.66%** से बढ़कर 2022-23 में **22.96%** तक पहुँच गया।
- 2022-23 में राज्यों का कुल कर्ज़ भारत के GDP का **22.17%** रहा।

2. राज्यवार कर्ज़-से-GSDP अनुपात:

- **सबसे अधिक**: पंजाब (40.35%), नागालैंड (37.15%), पश्चिम बंगाल (33.70%)।
- **सबसे कम**: ओडिशा (8.45%), महाराष्ट्र (14.64%), गुजरात (16.37%)।
- 8 राज्यों का कर्ज़ **30% से अधिक**, जबकि 6 राज्यों का कर्ज़ **20% से कम** रहा।

3. कर्ज़ और राजस्व रसीदें (Debt and Revenue Receipts):

पिछले एक दशक में राज्यों का कर्ज़ राजस्व रसीदों का **128%–191%** तक रहा।

औसतन, राज्यों का कर्ज़ उनकी **150% राजस्व रसीदों / गैर-कर्ज़ रसीदों** के बराबर है।

उच्च कर्ज़ के कारण:

1. जनतामुखी राजनीति (Populist Politics)

- बिजली सब्सिडी, कृषि ऋण माफी, नकद हस्तांतरण, पुराने पेंशन स्कीम का पुन: शुरु होना आदि।
- इन खर्चों के लिए अक्सर **उधारी (borrowings)** का सहारा लिया जाता है।

2. प्रतिस्पर्धी जनतामुखी नीतियाँ:

- पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश जैसे राज्य महंगे कल्याणकारी योजनाओं को अपनाते हैं।
- इससे राजकोषीय दबाव बढ़ता है।

3. COVID-19 का प्रभाव: कर्ज़-से-GSDP अनुपात 2019-20 में **21%** से बढ़कर 2020-21 में **25%** हो गया।

4. GST पर निर्भरता:

- GST लागू होने के बाद राज्यों को **स्वतंत्र कराधान अधिकार** (जैसे octroi, entry tax) खो गए।
- GST मुआवजा जून 2022 में बंद **राजस्व अंतर**।

5. वर्तमान खर्च के लिए उधारी:

- रिपोर्ट ने 'गोल्डन रूल' का उल्लंघन बताया: सरकारें केवल निवेश के लिए कर्ज़ लें, संचालन खर्च के लिए नहीं।
- CAG ने पाया कि 11 राज्यों में (पंजाब, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश आदि) **नेट उधारी का आधा हिस्सा वेतन, पेंशन, सब्सिडी** पर खर्च हुआ, इंफ्रास्ट्रक्चर पर नहीं।

चिंताएँ:

- **क्राउडिंग आउट:** राज्यों के अधिक SDL उधार लेने से ब्याज दरें बढ़ जाती हैं, जिससे निजी कंपनियों के लिए ऋण महंगा हो जाता है।
- **मुद्रास्फीति का दबाव:** अत्यधिक ऋण आधारित खर्च, खासकर उपभोग सब्सिडी पर, महँगाई को और बढ़ा सकता है।
- **ब्याज और ऋण सेवा बोझ:** ऊँची ब्याज दरों पर बढ़ते बाजार उधार (SDLS) से पुनर्भुगतान का दबाव बढ़ता है। कई राज्यों में 20-25% राजस्व प्राप्ति केवल ब्याज चुकाने में चली जाती है, जिससे विकास कार्यों के लिए संसाधन सीमित हो जाते हैं।
- **केंद्र-राज्य राजकोषीय संतुलन:** केंद्र सरकार का ऋण (FY24 में GDP का ~57%) और राज्यों का ऋण (~23% GDP) मिलकर भारत का कुल सरकारी ऋण लगभग GDP का 80% पहुँचाता है, जो FRBM समिति के लक्ष्य (60%) से कहीं अधिक है।

भारत की विनिर्माण गति / India’s Manufacturing Momentum

संदर्भ:

जुलाई 2025 में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। कुल वृद्धि 3.5% रही, जबकि विनिर्माण क्षेत्र में साल-दर-साल 5.4% की तेज़ वृद्धि देखने को मिली। यह उछाल मुख्य रूप से विनिर्माण गतिविधियों के विस्तार से आया है, जो बढ़ती मांग और बेहतर क्षमता उपयोग को दर्शाता है।

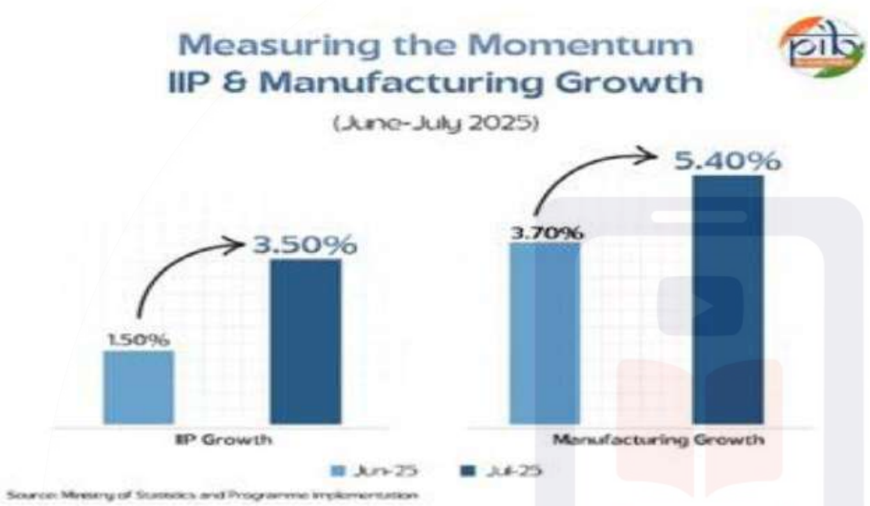

भारत के निर्माण क्षेत्र की गति:

1. औद्योगिक उत्पादन (IIP Growth)

- जुलाई 2025 में IIP में 3.5% वृद्धि, जून में 1.5%।
- **मैन्युफैक्चरिंग ग्रोथ 5.4%:** मांग में पुनरुत्थान का संकेत।

2. निर्यात प्रदर्शन (Export Performance)

- अप्रैल–अगस्त 2025 में मर्चेंडाइज एक्सपोर्ट्स में 2.52% YoY वृद्धि, कुल US$ 184.13 बिलियन।
- मुख्य क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा और ऑटोमोबाइल्स।

3. रोजगार (Employment Gains)

- बेरोजगारी दर (Unemployment Rate) 5.0% तक कम हुई।
- पुरुषों में बेरोजगारी 5-माह के निचले स्तर पर।
- **महिला कार्यबल भागीदारी 32% तक बढ़ी:** समावेशी रोजगार का संकेत।

4. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI Flows)

- FY25 में FDI प्रवाह US$ 81.04 बिलियन (+14% YoY)।
- मैन्युफैक्चरिंग FDI 18% बढ़कर US$ 19.04 बिलियन।

निर्माण क्षेत्र के प्रेरक कारक:

1. PLI योजना:

- **₹1.97 लाख करोड़** की योजना, **14 सेक्टर्स** में लागू।
- उत्पादन बढ़ाने, निर्यात को प्रोत्साहित करने और **वैश्विक OEMs** को आकर्षित करने में मदद।

2. राष्ट्रीय निर्माण मिशन

- विभिन्न मंत्रालयों का समन्वय।
- **क्लीन-टेक मैन्युफैक्चरिंग पर फोकस:** सौर ऊर्जा, ईवी बैटरी, ग्रीन हाइड्रोजन

3. आधारभूत संरचना: PM GatiShakti और Industrial Corridors- लॉजिस्टिक्स लागत कम, कनेक्टिविटी बेहतर।

4. GST 2.0 सुधार (GST 2.0 Reforms)

- दो-स्तरीय GST (Two-slab GST)
- दरों का तर्कसंगतकरण (Rationalized rates)
- तेज़ रिफंड (Faster refunds)
- Compliance costs घटे, घरेलू मांग को बढ़ावा।

5. इलेक्ट्रॉनिक्स और मोबाइल क्रांति:

- मोबाइल निर्माण इकाइयों में **150x वृद्धि (2- 300)**
- निर्यात ₹2 लाख करोड़ पार
- आयात पर निर्भरता कम हुई।

भारत के विनिर्माण क्षेत्र का महत्व:

- **वैश्विक निवेश आकर्षण:** लगातार सुधारों, सरल नियमों और स्थिर नीतिगत माहौल के कारण भारत वैश्विक निवेशकों के लिए शीर्ष गंतव्य बन गया है।
- **निवेश प्रवाह में अग्रणी राज्य:** महाराष्ट्र ने 39% निवेश आकर्षित कर बढ़त बनाई, इसके बाद कर्नाटक और दिल्ली का स्थान रहा।
- **मुख्य FDI स्रोत:** सिंगापुर, मॉरीशस और अमेरिका शीर्ष विदेशी निवेशक देश रहे।
- **आर्थिक विकास का इंजन:** विनिर्माण क्षेत्र घरेलू मांग बढ़ाने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारत की भूमिका मजबूत करने वाला प्रमुख चालक बन रहा है।
- **रोज़गार सृजन:** यह क्षेत्र विशेष रूप से अर्ध-कुशल और कुशल श्रमिकों के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा कर रहा है।
- **कार्यबल भागीदारी में वृद्धि:** हालिया आँकड़े दर्शाते हैं कि कार्यबल भागीदारी दर 52.2% तक पहुँची है और महिलाओं की भागीदारी भी लगातार बढ़ रही है।
- **बेरोजगारी में कमी:** बेरोजगारी दर में गिरावट दर्ज हुई है, जो व्यापक और समावेशी रोजगार वृद्धि का संकेत है।

पाक-सऊदी रक्षा समझौता / Pak-Saudi defence agreement

संदर्भ:

सऊदी अरब और पाकिस्तान ने हाल ही में रियाद में एक **सामरिक पारस्परिक रक्षा समझौते (Strategic Mutual Defence Agreement)** पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत यह तय हुआ है कि किसी एक देश पर हमला, दोनों देशों पर हमले के समान माना जाएगा। यह समझौता ऐसे समय में हुआ है जब पश्चिम एशिया, क़तर में इज़रायल के हमले के बाद बढ़ती अस्थिरता का सामना कर रहा है।

पाक-सऊदी रक्षा समझौते के रणनीतिक आयाम:

1. समझौते का दायरा:

- सभी सैनिक साधनों (military means) को शामिल करता है।
- इसमें संयुक्त प्रशिक्षण, खुफिया साझेदारी (intelligence sharing), और समन्वित अभ्यास शामिल हैं।

2. पारस्परिक रक्षा प्रावधान:

- कहा गया है: "किसी भी देश पर हमला दोनों देशों पर हमला माना जाएगा"।
- यह लंबे समय से चर्चा में रहे सुरक्षा सहयोग को औपचारिक रूप देता है।

3. परमाणु छत्र:

- इस समझौते के तहत इस्लामाबाद की परमाणु क्षमता सऊदी अरब को उपलब्ध हो सकती है।
- यह पहली बार सार्वजनिक रूप से सऊदी अरब और पाकिस्तान के परमाणु निरोधक कनेक्शन को मान्यता देता है।
- पीछे का कारण: 1970s और 1980s में सऊदी वित्तीय समर्थन।

4. निर्भरता और रणनीतिक पुनर्विचार:

- पारंपरिक रूप से सऊदी अरब संयुक्त राज्य अमेरिका पर निर्भर रहा है।
- पाकिस्तान के साथ यह रक्षा समझौता सऊदी सुरक्षा रणनीति में पुनर्मूल्यांकन (recalibration) दर्शाता है।
- कारण: यूएस पर दीर्घकालिक भरोसे में कमी।

5. सऊदी अरब की स्थिति:

- समझौते को क्षेत्रीय शांति और स्थिरता की दिशा में कदम बताया गया।
- समय और हालात स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि यह कतर में इज़राइल के हमले के बाद बदलते संतुलन का संकेत है।

अमेरिका के रवैये के कारण हुआ समझौता:

अमेरिका अब तक मिडिल ईस्ट में सुरक्षा गारंटी देता था, लेकिन 9 सितंबर को इज़रायल के क़तर पर हमले में उसने कोई मदद नहीं की। इससे मुस्लिम देशों का भरोसा टूटा और वे नए सुरक्षा साझेदार खोजने लगे। इसी असुरक्षा ने सऊदी अरब और पाकिस्तान को रक्षा समझौता करने के लिए प्रेरित किया।

पाक-सऊदी समझौता और NATO का तुलनात्मक दृष्टिकोण

NATO का Article-5

- NATO में 32 देश शामिल (अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप आदि)।
- Article-5 के तहत: किसी भी सदस्य देश पर हमला: सभी देशों पर हमला माना जाएगा।
- परिणाम: दूसरे विश्व युद्ध के बाद NATO देशों को कभी भी Full Scale War में शामिल नहीं होना पड़ा।

पाकिस्तान-सऊदी रक्षा समझौते की समानता

- समझौते का Mutual Defence Clause Article-5 जैसा है।
- कहा गया है: "किसी भी देश पर हमला दोनों देशों पर हमला माना जाएगा।"

भारत के लिए निहितार्थ (Implications):

- **पाकिस्तान की मज़बूत स्थिति:** सऊदी सहयोग से पाकिस्तान को राजनीतिक और आर्थिक बल मिलेगा, जो कश्मीर और आतंकवाद के मुद्दों पर भारत के लिए चुनौती बन सकता है।
- **नई सुरक्षा चिंताएँ:** सऊदी फंडिंग से पाकिस्तानी सेना और सक्षम हो सकती है, जिससे भारत की सुरक्षा रणनीति जटिल होगी।
- **गल्फ में डोमिनो प्रभाव:** इस pact से अन्य देशों में भी रक्षा गठबंधन की प्रवृत्ति बढ़ सकती है, जिससे क्षेत्रीय अस्थिरता और भारत की ऊर्जा व प्रवासी सुरक्षा प्रभावित होगी।
- **रणनीतिक निवारण:** पाकिस्तान इसे भारत के खिलाफ सुरक्षा कवच या निवारक शक्ति के रूप में देख सकता है।
- **IMEC पर असर:** सऊदी प्राथमिकताओं में पाकिस्तान की ओर झुकाव होने से भारत की रणनीतिक और आर्थिक परियोजनाएँ प्रभावित हो सकती हैं।
- **कूटनीतिक संतुलन:** भारत को सऊदी अरब (ऊर्जा व निवेश) और इज़रायल (रक्षा व तकनीक) दोनों के साथ रिश्तों में संतुलन साधना होगा।

वैश्विक जल संसाधन की स्थिति 2024 / State of Global Water Resources 2024

संदर्भ:

विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) ने अपनी नई रिपोर्ट **The State of Global Water Resources 2024** जारी की है। यह वार्षिक रिपोर्ट वैश्विक ताजे पानी की उपलब्धता और जल भंडारण का विश्वसनीय आकलन प्रस्तुत करती है, जिसमें झीलें, नदियों का प्रवाह, भूमिगत जल, मृदा की नमी, बर्फ और हिम शामिल हैं। रिपोर्ट 2024 में हाइड्रोलॉजिकल चरम घटनाओं की जानकारी देती है और नीति निर्माताओं को सूखे, बाढ़ और ग्लेशियर पिघलने जैसी स्थितियों के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करती है, जो बदलते जलवायु और जल चक्र को दर्शाती हैं।

WMO रिपोर्ट: जलवायु और जल संसाधन पर मुख्य निष्कर्ष

1. नदी घाटियों में असमानता (Erratic River Basins)

- दुनिया की केवल **एक तिहाई नदी घाटियां सामान्य स्थिति में**, बाकी दो तिहाई या तो **अधिक या कम जल प्रवाह** वाली।
- यह प्रवृत्ति लगातार **6 वर्ष** जारी है।

2. ग्लेशियर और समुद्र तल (Glacier Loss & Sea Level)

- ग्लेशियरों का व्यापक नुकसान लगातार तीसरे वर्ष।
- लगभग 450 गीगाटन बर्फ़ पिघली, जिससे समुद्र स्तर में 1.2 मिमी वृद्धि।
- नुकसान = 180 मिलियन ओलंपिक स्विमिंग पूल।
- कुछ क्षेत्रों में छोटे ग्लेशियर पिक-जल (peak-water) सीमा तक पहुँच गए।

3. जल संकट (Water Stress)

- आज 3.6 बिलियन लोग हर साल कम से कम एक बार पानी की कमी का सामना करते हैं।
- 2050 तक यह 5 बिलियन से अधिक हो सकता है।
- WHO/UN Water के अनुसार बढ़ती मांग और जलवायु प्रभाव मुख्य कारण।

4. चरम जलवायु और तापमान (Climatic Conditions)

- **2024 सबसे गर्म वर्ष** के रूप में रिकॉर्ड।
- **El Niño**: उत्तरी दक्षिण अमेरिका, अमेज़न, दक्षिणी अफ्रीका में सूखा।
- **वर्षा अधिक (Wetter-than-average)**: मध्य/पश्चिम अफ्रीका, कजाखस्तान, सेंट्रल यूरोप, पाकिस्तान, भारत के उत्तरी क्षेत्र, ईरान और चीन के कुछ हिस्से।

5. क्षेत्रीय जल पैटर्न (Regional Patterns)

- **सूखा:** अमेज़न बेसिन, दक्षिण अमेरिका के Paraná, Orinoco, São Francisco; दक्षिणी अफ्रीका के Zambezi, Limpopo, Okavango।
- **बाढ़:** पश्चिम अफ्रीका (Senegal, Niger, Lake Chad, Volta), यूरोप में 2013 के बाद सबसे खराब बाढ़।
- **अधिक प्रवाह:** Danube, Ganges, Godavari, Indus और मध्य एशियाई नदियां।

6. झीलें, जलाशय और भूजल:

- **झीलें:** 75 प्रमुख झीलों में गर्मियों के दौरान असामान्य ऊष्मा- जल गुणवत्ता प्रभावित।
- **भूजल:** 37,406 कुओं में केवल **38%** सामान्य स्तर पर; अधिक दोहन जारी।
- **जलाशय और मिट्टी में नमी:** यूरोप और भारत में भराव (recharge), अफ्रीका, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया के कुछ हिस्सों में सतत कमी।

जल चक्र (Water Cycle):

1. परिभाषा (Definition): जल चक्र पृथ्वी और वायुमंडल में पानी की लगातार गति को दर्शाता है।

- इसमें पूल और फ्लक्सेस शामिल होते हैं।

2. पूल (Pools): जल के संग्रह के विभिन्न रूप और स्थान:

  - **झीलें (Lakes)**
  - **ग्लेशियर (Glaciers)**
  - **वायुमंडल (Atmosphere)**
  - **भूमिगत जल (Groundwater)**

3. फ्लक्सेस (Fluxes)

- पानी के **पूल्स के बीच गतियां और परिवर्तन**।
- इसमें **राज्य परिवर्तन (State Changes)** शामिल: वाष्पीकरण, संघनन, वर्षा (Precipitation)

4. जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:

- **वैश्विक तापमान वृद्धि- वाष्पीकरण में वृद्धि**।
- वायुमंडल में अधिक पानी जमा- **चरम मौसम घटनाएं**:
  - सूखा (Droughts)
  - भारी वर्षा (Heavy Precipitation)
  - तूफान/हरिकेन (Hurricanes)
- **ग्लेशियर पिघलने और महासागरीय विस्तार- समुद्र स्तर वृद्धि**, तटीय क्षेत्रों में **बाढ़ का खतरा**।

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार / NAI

संदर्भ:

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत (NAI) द्वारा **राष्ट्रीय अभिलेखपाल समिति (NCA)** की **50वीं स्वर्ण जयंती बैठक** का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश में अभिलेख प्रबंधन, संरक्षण और डिजिटलीकरण को और मज़बूत बनाने पर विशेष जोर दिया गया, ताकि ऐतिहासिक दस्तावेज़ों और अभिलेखीय धरोहर को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सके।

राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives of India – NAI)

- **स्थापना और इतिहास:** राष्ट्रीय अभिलेखागार की स्थापना 1891 में कोलकाता (तब का कलकत्ता) में *Imperial Record Department* के रूप में हुई थी। बाद में 1911 में इसे नई दिल्ली स्थानांतरित किया गया। इसका भवन प्रसिद्ध वास्तुकार **सर एडविन लुटियन्स** द्वारा डिजाइन किया गया था और यह **जनपथ (इंडिया गेट के पास)** स्थित है।
- **भूमिका और महत्व:** यह भारत सरकार का प्रमुख *repository* है जहाँ राष्ट्र की **दस्तावेजी धरोहर** सुरक्षित रखी जाती है।

  यह भारत सरकार के गैर-प्रचलित अभिलेखों का **custodian (संरक्षक)** है।
- **प्रशासनिक स्थिति:**
  - यह **संस्कृति मंत्रालय** के अधीन एक संलग्न कार्यालय (Attached Office) के रूप में कार्य करता है।
  - इसे **Director General of Archives** (महानिदेशक) संचालित करते हैं।
  - इनके अधीन **Public Records Act, 1993** और **Rules, 1997** का कार्यान्वयन किया जाता है।
- **संग्रह:**
  - यहाँ **4 करोड़ से अधिक दस्तावेज़** संरक्षित हैं।
  - दस्तावेज़ 16वीं शताब्दी से लेकर वर्तमान तक के हैं।
  - ये विभिन्न भाषाओं में हैं जैसे **फ़ारसी, अरबी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेज़ी**।

मातृ मृत्यु अनुपात / Maternal Mortality

संदर्भ:

पुदुचेरी लेफ्टिनेंट गवर्नर **के. कैलासनाथन** ने घोषणा की कि पुदुचेरी वर्ष 2024-25 में प्रसव के दौरान **शून्य मातृ मृत्यु** दर्ज करने वाला भारत का पहला केंद्र शासित प्रदेश बन गया है।

Maternal Mortality Ratio (MMR):

- **परिभाषा (Definition):** मातृ मृत्यु (Maternal Mortality) का अर्थ है – किसी महिला की **गर्भावस्था के दौरान या गर्भ समाप्ति के 42 दिनों के भीतर** मृत्यु हो जाना, जो गर्भावस्था से संबंधित कारणों के चलते हो, लेकिन इसमें *दुर्घटनाएँ या असंबंधित कारण* शामिल नहीं होते।
- **MMR की गणना:** **प्रति 1,00,000 जीवित जन्मों पर मातृ मृत्यु की संख्या** को मातृ मृत्यु अनुपात (MMR) कहते हैं।
- **स्वास्थ्य प्रणाली का सूचक:** MMR किसी भी देश में मातृ स्वास्थ्य सेवाओं की **गुणवत्ता, उपलब्धता और प्रभावशीलता** को दर्शाता है।
- **वैश्विक लक्ष्य (SDG Target):** **सतत विकास लक्ष्य (SDG) 3.1** के अंतर्गत भारत ने संकल्प लिया है कि वर्ष **2030 तक MMR को घटाकर 70 प्रति 1,00,000 जीवित जन्म** तक लाया जाएगा।

भारत में मातृ मृत्यु अनुपात (MMR) में प्रगति:

- **कमी दर्ज की गई:** *Sample Registration System (SRS)* के अनुसार भारत का MMR **130 (2014–16)** से घटकर **93 (2019–21)** हो गया है। यानी इस दौरान **37 अंकों की कमी** हुई है।
- **क्षेत्रीय उपलब्धियाँ:** कुछ राज्यों ने तो MMR को **SDG लक्ष्य 70 प्रति 1,00,000 जीवित जन्मों** से भी नीचे ला दिया है।
  - **केरल, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, झारखंड, गुजरात और कर्नाटक** ने यह लक्ष्य हासिल कर लिया है।

GS FOUNDATION *For*

UPSC & STATE PSC

- इतिहास
- अर्थव्यवस्था
- भूगोल
- भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

1500x4
~~₹6000/-~~

₹4500/-

- रोज़ाना लाइव क्लासेस
- साप्ताहिक टेस्ट
- क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
- लाइव डाउट सेशन
- रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न

COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
COURSE FEE
~~₹4000/-~~
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
BBK
Baaten Bazaar ki
एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
Baaten Bazar Ki
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE

+ (FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)

EMI AVAILABLE

- Long-Term Investing Foundations
- Principles of Value Investing and Stock
- Portfolio Construction Mastery
- Sectoral Investing
- Stock Picking Framework
- Active Portfolio Management Techniques
- Mega Cap vs Mid Cap Strategy

SPECIAL BONUS

COURSE VALIDITY
1 YEAR